किशोर-ग्रन्थमाला
४५
****

धनदा-यक्षिणी-तन्त्रम्

'शिवदत्ती' हिन्दीटीकासहितम्

(सद्यः लक्ष्मी-प्राप्ति एवं दारिद्र्य-विनाश का सर्वोत्तम साधन)

संस्कर्ता सम्पादकश्च
व्याकरणाचार्य-साहित्यवारिधि-तन्त्ररत्नाकर-
आचार्य पण्डित शिवदत्तमिश्र शास्त्री
(शताधिक ग्रन्थों के लेखक-सम्पादक एवं अनुवादक)



चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी

प्रकाशक : चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी
मुद्रक : चौखम्बा प्रेस, वाराणसी
संस्करण : द्वितीय, वि०सं० २०६३, सन् २००७
मूल्य

के० ३७/११८, गोपाल मन्दिर लेन
गोलघर (मैदागिन) के पास
पो० बा० नं० १११८, वाराणसी–२२१००१ (भारत)
फोन : (०५४२) २३३३४५८ P.P. & २३३५०२०

अपरं च प्राप्तिस्थानम्

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस
के० ३७/९९, गोपाल मन्दिर लेन
गोलघर (मैदागिन) के पास
पो० बा० नं० १००८, वाराणसी—२२१००१ (भारत)
फोन : (आफिस) (०५४२) २३३३४५८
(आवास) (०५४२) २३३५०२०, २३३४०३२
Fax : 0542 - 2333458
e-mail : cssoffice@satyam.net.in
web-site : www.chowkhambaseries.com

प्राक्कथन

वर्तमान समय में जिसके पास लक्ष्मी हैं, उसके मित्र बहुत होते हैं, बन्धु-बान्धवों की भी कमी नहीं रहती एवं वही पुरुष सर्वश्रेष्ठ और सर्वत्र प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। अर्थात् सर्वत्र धनवानों को ही प्रधानता और सम्मान प्राप्त है। वस्तुतः देखा जाय तो धनाभाव में किसी का कुछ काम भी नहीं चलता। इसलिए लक्ष्मी-प्राप्ति हेतु सभी लोग पूजा-पाठ, मन्त्र-जप एवं अनेकानेक अनुष्ठानादि कार्य करते और कराते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक भी लक्ष्मी-प्राप्ति के लिए विशेष उपयोगी और महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि पार्वती-शिव के प्रश्नोत्तर रूप में ब्रह्मा एवं कुबेर के माध्यम से भगवान् शङ्कर द्वारा कथित है।

पूर्व समय में जगन्माता पार्वती ने लोक-कल्याण की भावना से दारिद्र्य-विनाशक एवं सर्वैश्वर्य प्रदायक इस धनदा-यक्षिणी तन्त्र के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए भगवान् आशुतोष शिवजी से प्रश्न किया था। प्रश्नोत्तर में भगवान् शङ्कर ने कहा कि, पूर्व समय में ब्रह्मा ने सद्यः दरिद्रतानाशक इस रतिप्रिया धनदा-यक्षिणी तन्त्र का विधान कुबेर को बताया था।

भगवान् शङ्कर ने कहा—कोई भी मनुष्य यदि ब्रह्मा के मुख से निर्गत इस धनदा-यक्षिणी तन्त्र के मन्त्र को एक वर्ष तक निरन्तर जप करे तो वह निश्चित रूप से धन-धान्यादि सम्पूर्ण सम्पत्तियों से परिपूर्ण हो जाता है—यह एक निश्चयात्मक तथ्य है।

अब तक हिन्दी टीका सहित इस धनदा-यक्षिणी तन्त्र का सर्वसाधारणोपयोगी संस्करण कोई उपलब्ध नहीं था। साधकों की समस्त कठिनाइयों को ध्यान में रखकर ही प्रस्तुत पुस्तक प्रकाशित की गयी है।

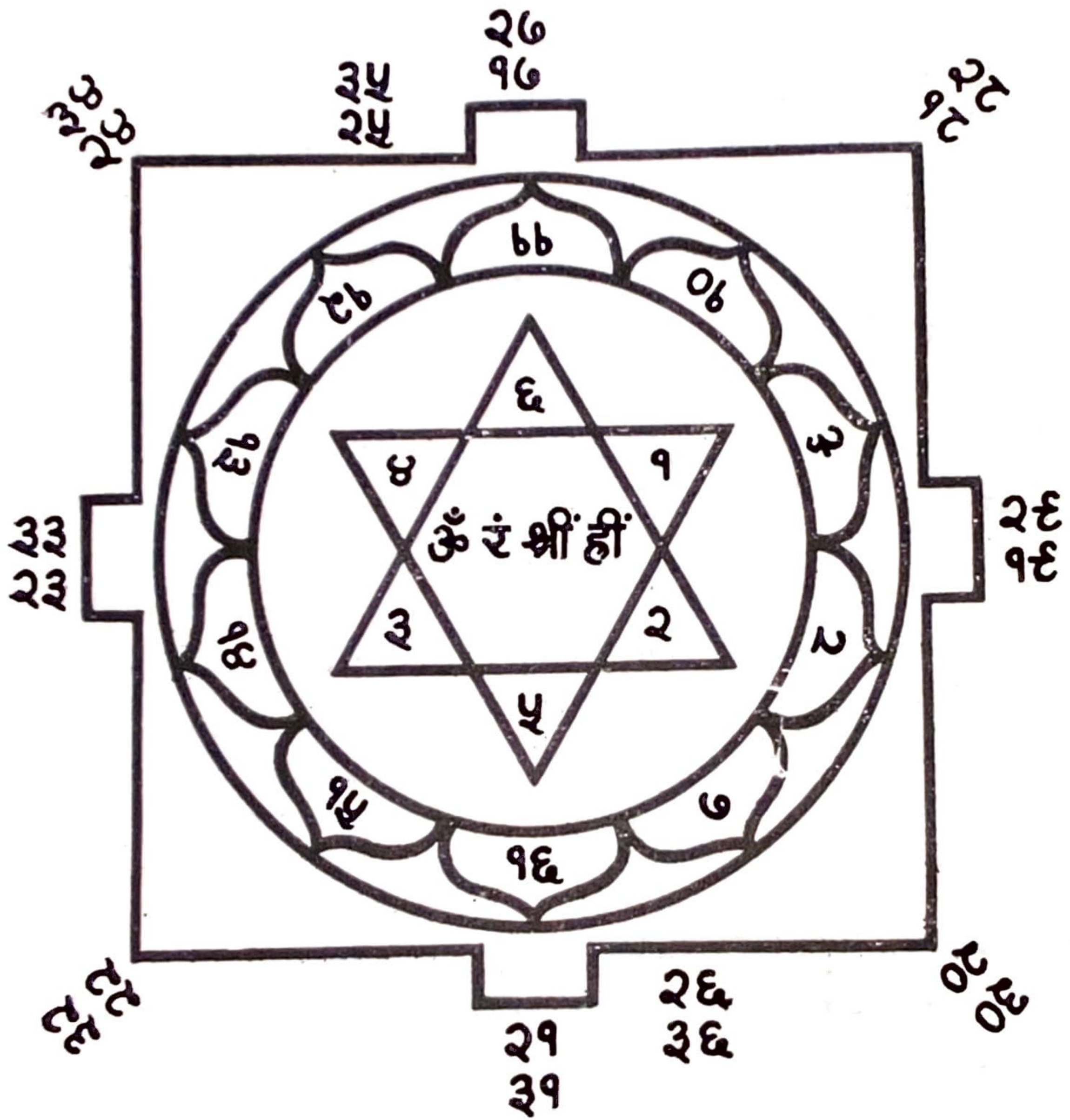
इसमें धनदा-यक्षिणी मन्त्र, विनियोग, ऋष्यादिन्यास, करन्यास, हृदयादि षडङ्गन्यास, मन्त्रवर्णन्यास, मन्त्रपदन्यास, कवचन्यास, दिङ्-

आचार्य-प्रवर, विद्वन्मूर्धन्य शताधिक ग्रन्थों के लेखक, सम्पादक एवं अनुवादक श्रीमान् पण्डित शिवदत्त मिश्र जी तन्त्रशास्त्र के रहस्य द्रष्टा भाष्यकार हैं। इनके विभिन्न ग्रन्थों का मैंने स्वयम् अवलोकन किया है। इसी क्रम में उन्होंने धनदा-यक्षिणी तन्त्र के प्रकाशन में अपना योगदान देकर इस ग्रन्थ को अपनी लेखनी के अनुदान से विभूषित किया है। काशी की ये विभूति हैं। मैं इस ग्रन्थ के विस्तार की ओर लोकहित में प्रचार की कामना करता हूँ। सर्वाङ्ग सुन्दर छपाई एवं विशुद्ध मुद्रण के लिए कृष्णदास अकादमी के अध्यक्ष महोदय को भी साधुवाद प्रदान करता हूँ।

३६ ए०, बादशाह बाग
वाराणसी

—डा० परमहंस मिश्र

धनदा-रतिप्रिया-यक्षिणी-पूजनयन्त्रम्



विषयानुक्रमणिका

•

❀ श्रीमात्रे जयन्त्यै नमः ❀

आचार्य-पण्डित-शिवदत्तमिश्रशास्त्रि-संस्कृतम्

धनदायक्षिणीतन्त्रम्

'शिवदत्ती' हिन्दीटीकासहितम्

•

प्रणम्य शिरसा गौरी प्रोवाच शशिशेखरम् ।
येन कल्पेन दारिद्र्यं विनश्येत च तद् वद ॥ १ ॥

श्रुत्वा गौरीवचः शम्भुः स्मितचारुशुभाननः ।
शृणु त्वं देवदेवेशि ! दारिद्र्यस्य विनाशकम् ॥ २ ॥

साम्बं सदाशिवं नत्वा नत्वा लक्ष्मीपतिं विभुम् ।
वक्ष्ये धनदातन्त्रस्य भाषाटीकां हितावहाम् ॥

रुद्रयामल तन्त्र के आधार पर—किसी समय शशिशेखर भगवान् सदाशिव को प्रणाम कर गौरी बोलीं—हे भगवन् ! जिस उपाय से दरिद्रता का नाश हो, आप उसे बताइए ? ॥ १ ॥

भगवती गौरी की बात सुन कर मन्द-मन्द मुस्कराते हुए प्रसन्न मुख हो भगवान् शङ्कर बोले—हे देवदेवेशि ! तुम दारिद्र्य विनाशक उपाय को सुनो ॥ २ ॥

पुरा विश्वसृजा प्रोक्ता कुबेराय महात्मने ।
विद्या दारिद्र्य-संहन्त्री यक्षिणी पापखण्डिनी ॥ ३ ॥

तेन सा तु समाख्याता यक्षिणी सुरसुन्दरी ।
ततो निधिवराणां तु नायको निश्चितं भवेत् ॥ ४ ॥

निर्धनो वा महीपो वा विद्यां तां ब्रह्मणो मुखात् ।
श्रुता कुबेरवक्त्रेण स भवेत् परमो धनी ॥ ५ ॥

तच्छ्रुत्वा गिरिजा देवी पुनः प्राह शिवं प्रति ।
कृपा ते विद्यते कान्त ! तदा त्वं मां प्रबोधय ॥ ६ ॥

श्रुत्वा पुनश्च पार्वत्या वाक्यमेवं प्रहस्य च ।
शम्भुः प्राह न जानासि पार्वत्या मूर्तिरेव सा ॥ ७ ॥

पूर्वकाल में ब्रह्मदेव ने दारिद्र्य का विनाश करने वाली, पाप-समूहों को खण्ड-खण्ड करने वाली यक्षिणी नाम की इस विद्या को महात्मा कुबेर से कहा था ॥ ३ ॥

इस कारण वह यक्षिणी सुरसुन्दरी नाम से भी कही जाती है। उस विद्या के प्रभाव से मनुष्य निश्चित रूप से श्रेष्ठ निधियों का स्वामी बन जाता है ॥ ४ ॥

ब्रह्मदेव के मुख से प्रतिपादित, कुबेर के मुख से प्रसिद्धि को प्राप्त होने वाली इस विद्या को जान कर चाहे निर्धन हो, चाहे राजा हो अवश्य ही सर्वश्रेष्ठ धनी हो जाता है ॥ ५ ॥

इस बात को सुन कर गिरिजा देवी ने पुनः शिवजी से कहा—हे कान्त ! आप की कृपा मुझ पर है, तो मुझे आप उस विद्या का उपदेश कीजिए ॥ ६ ॥

यां श्रुत्वा याति रङ्कोऽपि भूपालत्वं न संशयः ।
विद्याधरत्वमाप्नोति किं पुनर्बहुभाषितैः ॥ ८ ॥
याति लक्षेश्वरत्वं च त्वद्भक्तो देवि ! सर्वदा ।
वर्षेणापि स्मरन् मन्त्रं भवेद् बहुधनो नरः ॥ ९ ॥
नो संस्पृशति दारिद्र्यं तार्क्ष्यं भोगकुलं यथा ।
अस्य मन्त्रस्य चोद्धारं प्रवक्ष्ये शृणु पार्वति ! ॥ १० ॥
नाऽङ्गन्यासः करन्यासो न छन्दो ऋषिदैवतम् ।
कुबेरस्य मतो नाऽस्याः पूजापि क्रियते तथा ।
विधिमस्याः प्रवक्ष्यामि शृणु त्वं शैलसम्भवे ! ॥ ११ ॥

पार्वती के द्वारा पुनः इस प्रश्न को सुन कर सदाशिव ने कहा—तुम क्या नहीं जानती कि वह विद्या पार्वती की ही मूर्त्ति है ॥ ७ ॥

उस विद्या को जान कर रङ्क भी राजा बन जाता है, इसमें संशय नहीं। बहुत कहने से क्या ? वह विधाधरत्व को भी प्राप्त कर लेता है ॥ ८ ॥

हे देवि ! तुम्हारा वह भक्त सर्वदा के लिए लखपति बन जाता है। मात्र एक वर्ष भी यदि मनुष्य महाविद्या मन्त्र का जप कर ले, तो बहुत बड़ा धनवान् हो जाता है ॥ ९ ॥

उस जापक पुरुष को दरिद्रता इस प्रकार स्पर्श नहीं करती, जिस प्रकार सर्प-समूह गरुड़ को स्पर्श नहीं करते। हे पार्वती ! अब इस मन्त्र का उद्धार बता रहा हूँ, तुम उसे सुनो ॥ १० ॥

अङ्गन्यास, करन्यास, छन्द, ऋषि एवं देवता तथा इसकी पूजा भी नहीं करनी चाहिए (मात्र मन्त्र का जप ही अनुष्ठातव्य है) ऐसा कुबेर का मत है। किन्तु हे पार्वति ! मैं इसकी समस्त विधि कहता हूँ, तुम उसे सुनो ॥ ११ ॥

धनदायक्षिणीमन्त्रः—

[1]ॐ रं श्रीं ह्रीं धं धनदे रतिप्रिये स्वाहा। इति चतुर्दशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम्—

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीधनदेश्वरीमन्त्रस्य कुबेरऋषिः, पंक्तिच्छन्दः, श्रीधनदेश्वरी देवता, धं बीजं, स्वाहा शक्तिः, श्रीं कीलकं, श्रीधनदेश्वरीप्रसादसिद्धये समस्तदारिद्र्यनाशाय श्रीधनदेश्वरीमन्त्रजपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—ॐ कुबेरऋषये नमः, शिरसि (१)। पङ्क्तिच्छन्दसे नमो, मुखे (२)। धनदेश्वरीदेवतायै नमो, हृदि (३)। धं बीजाय नमो, गुह्ये (४)। स्वाहाशक्तये नमः, पादयोः (५)। श्रीं कीलकाय नमो, नाभौ (६)। विनियोगाय नमः, सर्वाङ्गे (७)। इति ऋष्यादिन्यासः।

धनदा मन्त्र—'ॐ रं श्रीं ह्रीं धं धनदे रतिप्रिये स्वाहा।' यह चौदह अक्षरों वाला धनदा-यक्षिणी विद्या का मन्त्र है।

विनियोग विधान—दाहिने हाथ में जल लेकर, 'ॐ अस्य०' से लेकर 'श्रीधनदेश्वरीमन्त्रजपे विनियोगः' पर्यन्त्र पढ़ कर, उस जल को नीचे गिरा देवे।

ऋष्यादिन्यास—'ॐ कुबेरऋषये नमः, शिरसि' (१) से लेकर 'विनियोगाय नमः, सर्वाङ्गे (७)' पर्यन्त मन्त्रों को पढ़ कर तत्तत्स्थानों को स्पर्श करे।

---

१. **तन्त्रान्तरेऽपि मन्त्रो यथा**—ॐ ह्रीं श्रीं मां देहि धनदे रतिप्रिये स्वाहा। इति पञ्चदशाक्षरो मन्त्रः।

ॐ धं श्रीं ह्रीं रतिप्रिये स्वाहा, इति दशाक्षरो मन्त्रः।

ॐ रं ह्रीं श्रीं रतिप्रिये स्वाहा। इति दशाक्षरो मन्त्रः।

ॐ श्रीं श्रीं यक्षिणी हं हं हं स्वाहा। इत्येकादशाक्षरो मन्त्रः।

ॐ ह्रीं ॐ मां मोचय मोचय स्वाहा। इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः।

करन्यासः—ॐ श्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः (१)। ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः (२)। ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां नमः (३)। ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः (४)। ॐ श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः (५)। ॐ श्रः करतलकर-पृष्ठाभ्यां नमः (६)। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यासः—ॐ श्रां हृदयाय नमः (१)। ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा (२)। ॐ श्रूं शिखायै वषट् (३)। ॐ श्रैं कवचाय हुम् (४)। ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् (५)। ॐ श्रः अस्त्राय फट् (६)। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

मन्त्रवर्णन्यासः—ॐ ॐ नमः, शिरसि (१)। ॐ रं नमः, मुखे (२)। ॐ श्रीं नमो दक्षिणनेत्रे (३)। ॐ ह्रीं नमो वामनेत्रे (४)। ॐ धं नमो दक्षिणकर्णे (५)। ॐ धं नमो वामकर्णे (६)। ॐ नं नमो दक्षनासापुटे (७)। ॐ दं नमो वामनासापुटे (८)। ॐ रं नमो हृदये (९)। ॐ तिं नमो दक्षिणस्तने (१०)। ॐ प्रिं नमो वामस्तने

इसके बाद करन्यास करना चाहिए—

करन्यास—'ॐ श्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः(१)'से लेकर 'ॐ श्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः (६)' पर्यन्त्र मन्त्रों को पढ़ते हुए दोनों हाथों की अँगुष्ठादि अँगुलियों को तथा दोनों हाथ के तलवों के ऊपरी एवं निचले भाग को स्पर्श करना चाहिए।

हृदयादिषडङ्गन्यास—'ॐ श्रां हृदयाय नमः (१)' से लेकर 'ॐ श्रः अस्त्राय फट् (६)' पर्यन्त मन्त्रों को पढ़ कर क्रमशः हृदय, शिर, शिखा आदि का स्पर्श करे।

पुनः दोनों बाहुओं एवं दोनों नेत्रों का स्पर्श करते हुए दाहिने हाथ को शिर के चारों ओर घुमा कर बाँयें हाथ की हथेली पर रख कर ताली बजावे।

मन्त्रवर्णन्यास—उपर्युक्त मन्त्र में आये हुए चौदह अक्षरों से क्रमशः 'ॐ ॐ नमः, शिरसि (१)' से लेकर 'ॐ हां नमः, पादयोः

(११)। ॐ यें नमो नाभौ (१२)। ॐ स्वां नमो गुह्ये (१३)। ॐ हां नमः पादयोः (१४)। इति मन्त्रवर्णन्यासः।

मन्त्रपदन्यासः—ॐ ॐ नमो मस्तके (१)। ॐ रं नमो मुखे (२)। ॐ श्रीं नमो हृदये (३)। ॐ ह्रीं नमः, कटचाम् (४)। ॐ धं नमो हस्तयोः (५)। ॐ धनदे नमो गुदे (६)। ॐ रतिप्रिये नमो लिङ्गे (७)। ॐ स्वाहा नमः, पादयोः (८)। इति पदन्यासः।

कवचन्यासः—ॐ धनदायै नमः, शिरसि (१)। ॐ मङ्गलायै नमो ललाटे (२)। ॐ दुर्गायै नमो भ्रुवोर्मध्ये (३)। ॐ त्रिनेत्रायै नमो दक्षिणनेत्रे (४)। ॐ चञ्चलायै नमो वामनेत्रे (५)। ॐ त्वरितायै नमो दक्षिणकर्णे (६)। ॐ मंजुघोषायै नमो वामकर्णे (७)। ॐ सुगन्धायै नमो दक्षिणनासापुटे (८)। ॐ पद्मायै नमो वामनानासापुटे (९)। ॐ वाराह्यै नमः, ऊर्ध्वोष्ठे (१०)। ॐ महामायायै नमः, अधरोष्ठे (११)। ॐ करालभैरव्यै नमो मुखे (१२)। ॐ सुन्दर्यै नमो दन्तजाले (१३) ॐ सरस्वत्यै नमो जिह्वायाम् (१४)। ॐ रुद्राण्यै नमश्चिबुके (१५)। ॐ चामर्यै नमः, कण्ठजाले (१६)। ॐ वज्रायै नमः, कण्ठ-पृष्ठे (१७)। ॐ हरिप्रियायै नमो दक्षस्कन्धे (१८)। ॐ कमलायै नमो वामस्कन्धे (१९)। ॐ वरदायै नमो दक्षिणहस्ते (२०)। ॐ

---

(१०)' पर्यन्त मन्त्रों को पढ़ते हुए मन्त्र के चौदह वर्णों द्वारा शरीर के तत्तत्स्थानों का स्पर्श करना चाहिए। इस प्रकार वर्णन्यास समाप्त।

मन्त्र पदन्यास—'ॐ ॐ नमो मस्तके' से लेकर 'ॐ स्वाहा नमः, पादयोः (८)' पर्यन्त मन्त्र में आये हुए आठ पदों से तत्तदङ्गों का स्पर्श करना चाहिए। इसप्रकार मन्त्र पदन्यास समाप्त।

कवचन्यास—'ॐ धनदायै नमः, शिरसि (१)' से लेकर 'ॐ सर्वैश्वर्यै नमः, सर्वाङ्गे (३८)' पर्यन्त नामों से नमस्कार करते हुए तत्तदङ्गों का स्पर्श करे।

अभयदायै नमो वामहस्ते (२१)। ॐ सुपट्टिकायै नमो दक्षाङ्गुलीषु (२२)। ॐ उमायै नमो वामाङ्गुलीषु (२३)। ॐ महालक्ष्म्यै नमो हृदये (२४)। ॐ कामदायै नमः, स्तनयोः (२५)। ॐ क्षुधायै नमः, उदरे (२६)। ॐ महाबलायै नमः, कट्याम् (२७)। ॐ धनुर्धरायै नमः, पृष्ठे (२८)। ॐ कामप्रियायै नमो लिङ्गे (२९)। ॐ गुह्येश्वर्यै नमो गुदे (३०)। ॐ चपलायै नमः, ऊर्वोः (३१)। ॐ लीलायै नमो जानुनोः (३२)। ॐ सर्वशक्त्यै नमो जङ्घयोः (३३)। ॐ भ्रामर्यै नमः, पादयोः (३४)। ॐ सर्वैश्वर्यै नमः, सर्वाङ्गे (३५)।

इति कवचन्यासः।

दिङ्न्यासः—ॐ ब्राह्म्यै नमः, पूर्वे (१)। ॐ माहेश्वर्यै नमो दक्षिणे (२)। ॐ कौमार्यै नमः, पश्चिमे (३)। ॐ वैष्णव्यै नमः, उत्तरे (४)। ॐ वाराह्यै नमः, ईशान्याम् (५) ॐ चामुण्डायै नमः, आग्नेयाम् (६)। ॐ कौवेर्यै नमः, नैर्ऋत्याम् (७)। ॐ वारुण्यै नमः, वायव्याम् (८)। ॐ ब्राह्म्यै नमः, ऊर्ध्वे (९)। ॐ अनन्तायै नमः, अधः (१०)।

ध्यानम्—

ॐ हेमप्राकारमध्ये सुरविटपितटे रक्तपीठाधिरूढां
ध्यायेत्तां यक्षिणीं वै परिमल-कुसुमोद्भासि-धम्मिल्लभाराम् ।

इसके वाद कवच में कहे गये देवी के तत्तन्नामों से दशों दिशाओं में रक्षा हेतु अञ्जलिबद्ध प्रणाम करे।

दिङ्न्यास की विधि—'ॐ ब्राह्म्यै नम; पूर्वे (१)' से लेकर 'ॐ अनन्तायै नमः, अधः (१०)' पर्यन्त दश मन्त्रों को पढ़ते हुए पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर और ईशान तथा ऊपर एवं नीचे अञ्जलिबद्ध नमस्कार करे।

तत्पश्चात्—'हेमप्राकारमध्ये०' श्लोक पढ़कर देवी का ध्यान करे—

जो सुवर्ण खचित-प्राकार के मध्य में कल्पवृक्ष के नीचे रक्त वर्ण के आसन पर विराजमान है, जिसके केश-पाश सुगन्धित पुष्पों द्वारा

पीनोत्तुङ्गस्तनाढ्यां कुवलयनयनां रत्नकाञ्चीं कराभ्यां
भ्राम्यद्रक्तोत्पलाभ्यां नवरविवसनां रक्तभूषाङ्गरागाम् ॥

ध्यानानन्तरं पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले 'ॐ आधारशक्त्यै नमः' इति मन्त्रेणाधारशक्तिं सम्पूज्य, अर्घ्यं स्थापयेत्। तदनन्तरं सुवर्णादिपत्रे चन्दनेन यन्त्रं लिखित्वा, 'ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः' इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा, पीठमध्ये यन्त्रं संस्थाप्य,

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥

इति मन्त्रं पठित्वा, प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् । पुनः—ध्यानं विधाय, मूलमन्त्रेण मूर्त्तिं प्रकल्प्य, पाद्याद्यारभ्य, पुष्पदान पर्यन्तम्,

---

ग्रथित हैं, मोटे तथा ऊँचे स्तनों वाली जिस देवी के दोनों नेत्र कमल के सदृश विशाल हैं। कमर में रत्न-निर्मित काञ्ची शोभित हो रही है, जो अपने दोनों हाथों से लाल वर्ण के दो कमलों को इधर-उधर घुमा रही हैं। जिसके वस्त्र सूर्य किरणों के समान देदीप्यमान हैं तथा जो रक्त वर्ण के आभूषणों एवं रक्त वर्ण के अङ्गरागों से जगमगा रही है। मैं उस यक्षिणी का ध्यान करता हूँ।

ध्यान करने के पश्चात् पीठादि पर रचित सर्वतोभद्र मण्डल पर 'ॐ आधारशक्त्यै नमः' इस मन्त्र से आधार शक्ति की पूजाकर अर्घ्यपात्र स्थापित करे। तदनन्तर सुवर्ण के बने पत्र पर चन्दन से यन्त्र लिख कर 'ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः' तथा 'अस्यै प्राणाः' यह मन्त्र पढ़कर प्राणप्रतिष्ठा करे।

उपचारैः सम्पूज्य, देव्या आज्ञां गृहीत्वा, आवरणपूजां कुर्यात्।

ॐ संविन्मये परे देवि! परामृतरसप्रिये।
अनुज्ञां देहि धनदे परिवारार्चनाय मे॥ १॥

ॐ श्रां हृदयाय नमः, हृदयश्रीपादुकां पूजयामि, तर्पयामि नमः (१)। ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा, शिरः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (२)। ॐ श्रूं शिखायै वषट्, शिखाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (३)। ॐ श्रैं कवचाय हुम्, कवचश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (४)। ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्, नेत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (५)। ॐ श्रः अस्त्राय फट्, अस्त्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (६)।

प्राणप्रतिष्ठा करने के पश्चात् हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि निवेदन परिवार अर्चना के लिए प्रार्थना करे।

हे ज्ञानमयि! हे परामृत रस से प्रेम करने वाली, हे परे देवि! हे धनदे! तुम आवरण-पूजा के लिए मुझे आज्ञा प्रदान करो॥ १॥

पुनः 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' ऐसा कह कर पूजन प्रारम्भ करे।

आवरण पूजा के लिए धनदा रतिप्रिया पूजन यन्त्र पुस्तक के प्रारम्भ में देखें।

षट्कोण केशरों में उसके आग्नेयादि चारों कोणों एवं मध्य के पूर्वादि चारों दिशाओं में 'ॐ श्रां हृदयाय नमः, हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (१)' से लेकर 'ॐ श्रः अस्त्राय फट् अस्त्रश्री-पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (६)' पर्यन्त छः मन्त्रों द्वारा षडङ्ग-पूजा करे।

इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूल मन्त्र—'ॐ रं श्रीं ह्रीं धं धनदे रतिप्रिये स्वाहा' का उच्चारण करते हुए 'ॐ अभीष्टसिद्धिं' इत्यादि मन्त्र पढ़ कर प्रार्थना करे।

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ २ ॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः, महालक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (१)। ॐ पद्मायै नमः, पद्माश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (२)। ॐ श्रियै नमः, श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (३)। ॐ हरिप्रियायै नमः, हरिप्रिया श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (४)। ॐ हरायै नमः, हराश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (५)। ॐ पद्मप्रियायै नमः, पद्मप्रियाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (६)। ॐ कमलायै नमः, कमलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

मन्त्रार्थ—हे शरणागत-वत्सले! तुम हमारा मनोरथ पूर्ण करो। मैं भक्तिपूर्वक यह प्रथमावरण पूजन तुम्हें समर्पित करता हूँ॥ २॥

इसके बाद पुष्पाञ्जलि समर्पित कर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' ऐसा उच्चारण करे।

इसके बाद दश दलों में पूज्य-पूजक के अन्तराल में प्राची तथा अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से वामावर्त्त—"ॐ महालक्ष्म्यै नमः, महालक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १)' से 'ॐलोलायै नमः,लोलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः(१०)।' पर्यन्त दश मन्त्रों को पढ़ते हुए दश दलों की पूजा करे। पुनः 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' मन्त्र पढ़ कर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे और नमस्कार करे। यहाँ तक द्वितीयावरण की पूजा हुई।

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि दशदिक्पालों की तथा उनके वज्रादि आयुधों की पूजा कर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

१. इन्द्र, २. अग्नि, ३. यम, ४. निऋति, ५. वरुण, ६. वायु, ७. कुबेर, ८. ईशान, ९. ब्रह्मा और १० अनन्त ये दश दिक्पाल हैं। इसी प्रकार वज्र आदि उनके आयुध हैं।

(७)। ॐ अञ्जायै नमः, अञ्जाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (८)। ॐ चञ्चलायै नमः, चञ्चलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (९)। ॐ लोलायै नमः, लोलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (१०)।

इत्यावरणपूजां कृत्वा, धूपादि-नमस्कारान्तं सम्पूज्य, प्रवालमालामादाय, हृदये धारयन्, एकाग्रचित्तो मन्त्रार्थं स्मरन् जपं कुर्यात्।

अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः। तद्दशांशेन होम-तर्पण-मार्जन-ब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन् सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च—

पूजन क्रमशः प्राची दिशा के क्रम से वामावर्त्त 'ॐ इन्द्राय नमः, इन्द्र-श्रीपादुकां पूजयामि। ॐ ईशानाय नमः, ईशानश्रीपादुकां पूजयामी'त्यादि से लेकर 'ॐ अग्नये नमः, अग्निश्रीपादुकां पूजयामि' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर पूजन करे। पश्चात् पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र पढ़कर 'पुष्पिता-स्तर्पिताः सन्तु' कह कर पुष्पाञ्जलि समर्पित करे। इसी प्रकार 'ॐ वज्राय नमः, वज्रश्रीपादुकां पूजयामि' से लेकर दशायुधों का पूजन कर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

इस प्रकार आवरण पूजा समाप्त कर साधक मूँगे की माला लेकर धूपादि नमस्कारान्त पूजन कर, उसे हृदय में धारण करते हुए एकाग्र चित्त हो, मन्त्रार्थं का स्मरण कर मूल मन्त्र का जप करे।

इसके पुरश्चरण की विधि एक लाख जप है। इसके बाद तद्-दशांश होम, तद्-दशांश तर्पण, तद्-दशांश मार्जन तथा उसका दशांश ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए। इतना कर लेने के पश्चात् मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्रसिद्धि के अनन्तर ही साधक प्रयोग (काम्यानुष्ठान) करे। तन्त्र शास्त्र में जप की विधि इस प्रकार है—

इति ध्यानं विधातव्यं चन्दनेनानुलेपितम् ।
ताम्रपात्रे विधातव्यं मण्डलं सुमनोहरम् ॥ १ ॥
तत्र पूजा विधातव्या दिव्यैव हि मनीषिणा ।
भुक्ते वाऽप्यथवा भुक्ते पायसान्नं निवेदयेत् ॥ २ ॥
रक्तप्रवालमाला तु कार्या साधकसत्तमैः ।
रक्तवस्त्रपरीधानो जपं कुर्यात् प्रयत्नतः ॥ ३ ॥
लक्षं जपेन्मन्त्रसिद्धिः पुरश्चर्यां समाचरेत् ।
घृताक्तेनेक्षुदण्डेन मधुना च दशांशतः ॥ ४ ॥
होमोऽपि च विधातव्यः क्षणाद् दारिद्र्यशान्तये ।
एवं सिद्धे मनौ मन्त्री प्रयोगान् कर्तुमर्हति ॥ ५ ॥

चन्दन से अनुलेपित कर भगवती का ध्यान करना चाहिए। ताम्रपात्र में मनोहर (गोलाकार) मण्डल का निर्माण करना चाहिए ॥ १ ॥

मनोषी पुरुष को उसी मण्डल पर दिव्य पूजा करनी चाहिए—देवी के भोग लगे रहने पर अथवा न लगे रहने पर पायसान्न (खीर) का भोग अवश्य लगावे ॥ २ ॥

उत्तम प्रकार का साधक रक्तवर्ण के मूँगे की माला बनवावे। और रक्त वस्त्र धारण कर उसी से प्रयत्नपूर्वक जप करे ॥ ३ ॥

एक लाख जप करने से इस मन्त्र की सिद्धि होती है, क्योंकि इतने जप से पुरश्चरण पूर्ण होता है। घी में डुबोये गये ऊँख के टुकड़ों से अथवा मधु से जप का दशांश हवन करना चाहिए ॥ ४ ॥

क्षण मात्र में 'दरिद्रता की शान्ति के लिए ही यह उत्तम विधि है। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध होने पर साधक प्रयोग (काम्य-कर्मानुष्ठान) का अधिकारी होता है ॥ ५ ॥

बिनियोगं तथा कुर्यात् साधकः सुमनोरथान् ।
रात्रौ च जप्यते साष्टसहस्रं सप्तवासरान् ॥ ६ ॥
एतेनापि च सिद्धिः स्यात् पुरश्चर्याधिका प्रिये ।
किमस्ति दुर्लभं देवि! साधयेद् यदि मानवः ॥ ७ ॥
दशकृत्वोऽथवा शौचं कृत्वा वाऽपि कुचैलताम् ।
यत् स्मरेद् देवि ! विद्यां तां दरिद्रेणाभिभूयते ॥ ८ ॥
कामदेवं जपेत् पार्श्वे देव्याः प्रत्यहमादरात् ।
तेन देव्या महाप्रीतिर्वाञ्छितार्थं ददाति सा ॥ ९ ॥
पूजान्ते च समायाति रात्रौ देवी धनेश्वरी ।
सर्वालङ्कारमुत्सृज्य दत्त्वा याति निजालये ॥ १० ॥

साधक अपने मनोरथ के अनुकूल विनियोग करे। यदि रात्रि में सात दिन पर्यन्त एक हजार आठ की संख्या में इस मन्त्र का जप करे तो भी मन्त्र की सिद्धि हो जाती है। हे प्रिये ! यह पुरश्चरण से भी अधिक फलदायी है। हे देवि ! यदि मनुष्य इस मन्त्र को सिद्ध कर ले तो उसे कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं ॥ ६-७ ॥

दश बार शुद्ध होकर अथवा गन्दे वस्त्र धारण कर यदि इस मन्त्र का जप किया जाता है, तो वह पुरुष दरिद्रता से अभिभूत हो जाता है ॥ ८ ॥

प्रतिदिन देवी के पार्श्वभाग में स्थित कामदेव की स्तुति अवश्य करनी चाहिए। क्योंकि, देवी की प्रीति उस पर अधिक रहती है, ऐसा करने से वह प्रसन्नतापूर्वक अभीष्ट प्रदान करती है ॥ ९ ॥

रात्रि के समय, पूजा के अन्त में धनेश्वरी देवी आती हैं और अपना समस्त आभरण वहीं छोड़ कर चली जाती हैं ॥ १० ॥

धनं च विपुलं दत्त्वा साधकस्य मनोरथान् ।
पूजयित्वा महेशानि चन्दनेनावलेपनम् ॥ ११ ॥
दातव्यं सर्वदा तस्यै नित्यं दारिद्र्यशान्तये ।
स्वयमाहेति यक्षिणी यो मां स्मरति नित्यशः ॥ १२ ॥
तस्य दारिद्र्यशमनं दासीवच्च करोम्यहम् ।
कुतो दारिद्र्यशङ्कास्य स हि कोटीश्वरो नरः ॥ १३ ॥

किङ्किणीतन्त्रे यथा—

वहु किं कथ्यते देवि ! शिलायां जप्यते सदा ।
शतं वा दशकृत्वो वा सकृद्वाऽपि च किं पुनः ॥ १४ ॥
न भवेत्तस्य दारिद्र्यमिति जानीहि पार्वति ! ।
चन्द्र-सूर्यग्रहे वाऽपि जप्यं दारिद्र्यमुक्तये ॥ १५ ॥

इतना ही नहीं, वह साधक को बहुत-सा धन देकर उसके मनोरथों को भी पूर्ण करती हैं। दरिद्रता की शान्ति के लिए पूजा करने के पश्चात् चन्दन का अनुलेपन अवश्य करना चाहिए। यक्षिणी ने स्वयं ऐसा कहा है कि, जो मुझे नित्य स्मरण करता है, मैं उसकी दरिद्रता दूर कर देती हूँ और दासी के समान उसकी सेवा करती हूँ। वह मनुष्य कोटचधिपति (करोड़पति) हो जाता है, फिर उसके दारिद्रच की शङ्का ही किस प्रकार हो सकती है ॥ ११-१३ ॥

किङ्किणी तन्त्र में—शिव जी ने पार्वती से कहा—हे देवि ! इस विषय में वहुत क्या कहा जाय, यह जप शिला पर करना चाहिए। यदि कोई एक बार, दश बार अथवा सौ बार जप करे, तो वह दरिद्रता से सन्त्रस्त नही होता। चन्द्रग्रहण अथवा सूर्य ग्रहण के समय में इस मन्त्र का जप दरिद्रता को दूर भगा देता है ॥ १४-१५ ॥

वित्तं दृष्ट्वाऽन्यलोकस्य जपेदष्टशतं मनुम् ।
तांस्तान् कामान् ददात्येव सदैव यदि जप्यते ॥ १६ ॥

यद्ययं जप्यते मन्त्रस्ततस्तुष्टा तमर्चयेत् ।
दरिद्राय स्वयं दत्ते गृहमायुश्च हेम च ॥ १७ ॥

येनाऽसौ जप्यते मन्त्रः सदा भक्तिपुरःसरम् ।
तस्य पुत्राश्च पौत्राश्च प्रपौत्राश्चापि तत्सुताः ।
दारिद्र्याभिभवं यान्ति न कदाचिद्धि संशयः ॥ १८ ॥

इति रुद्रयामले पार्वतीश्वरसम्वादे रतिप्रियाधनदा-यक्षिणीपटलं समाप्तम् ॥ १ ॥

•

दूसरे का धन देख कर यदि सदैव इस मन्त्र का एक सौ आठ बार जप किया जाय तो यह देवी सभी प्रकार का अभीष्ट फल प्रदान करती हैं ॥ १६ ॥

यदि दरिद्र पुरुष देवी के इस मन्त्र का जप करे, तो वह प्रसन्न होने पर उसकी पूजा करती हैं और उसे स्वयं गृह, आयु तथा सुवर्ण प्रदान करती हैं ॥ १७ ॥

जो भक्ति पूर्वक सदैव इस मन्त्र का जप करता है, उसके पुत्र-पौत्र एवं प्रपौत्र कभी भी दरिद्रता से अभिभूत नहीं होते, इसमें कोई संशय नहीं करना चाहिए ॥ १८ ॥

इस प्रकार 'शिवदत्ती' हिन्दीटीका में, रुद्रयामलतन्त्रोक्त पार्वतीश्वर संवाद में रतिप्रिया-धनदा-यक्षिणीपटल समाप्त ।

धनदा-रतिप्रिया-यक्षिणी-पद्धतिः

पुरश्चरणात् प्राक् तृतीयदिवसे क्षौरादिकं विधाय, ततः प्रायश्चित्ताङ्गतया विष्णुपूजा-विष्णुतर्पण-विष्णुश्राद्धं होमं चान्द्रायणादिव्रतं च कुर्यात् । व्रताऽशक्तौ गोदानं द्रव्यदानं च कुर्यात् । यदि सर्वकर्माऽशक्तः ततः प्रायश्चित्ताङ्गपञ्चगव्यप्राशनं कुर्यात् ।

ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके ।
प्राशनात् पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम् ॥

इति पठित्वा, प्रणवेन पञ्चगव्यं पिबेत् । तद्दिने उपवासं कुर्यात् । अशक्तश्चेत् पयःपानं हविष्यान्नम्, एकभक्तव्रतम् ।

पुरश्चरण के तीन दिन पहले क्षौरादिक क्रिया कर पश्चात् प्रायश्चित्ताङ्ग स्वरूप विष्णु-पूजा, विष्णु तर्पण, विष्णुश्राद्ध, होम पूर्वक चान्द्रायणादि व्रत करना चाहिए। यदि व्रत में अशक्त हो, तो गोदान अथवा गोनिष्क्रयी भूत द्रव्य दान करे। यदि कुछ भी करने का सामर्थ्य न हो, तो प्रायश्चित्ताङ्ग स्वरूप मात्र 'ॐ यत्त्वगास्थि॰' मन्त्र से पञ्चगव्य का प्राशन करना चाहिए।

पञ्चगव्य प्राशन का मन्त्रार्थ—मेरे शरीर के त्वक् तथा अस्थि में रहने वाला जो भी पाप है, वह इस पञ्चगव्य के प्राशन से इस प्रकार भस्म हो जाये, जिस प्रकार अग्नि इन्धन को भस्म कर देती है।

ऐसा पढ़ कर प्रणव उच्चारण करते हुए पञ्चगव्य का पान करे। पश्चात् उस दिन उपवास करे। यदि उपवास करने में अशक्त हो, तो हविष्यान्न का एक बार भोजन करे। पुरश्चरण करने से पूर्व दिन

पुरश्चरणात् पूर्वदिने स्वदेहशुद्ध्यर्थं पुरश्चरणाधिकारप्राप्त्यर्थं चाऽयुतगायत्रीजपं कुर्यात् । तद्यथा—

सङ्कल्पः—

देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं स्वविहित-ज्ञाताऽज्ञात-पापक्षयार्थं करिष्यमाण-श्रीधनदेश्वरीपुरश्चरणा-ऽधिकारार्थममुकमन्त्रसिद्ध्यर्थं च गायत्र्ययुतजपमहं करिष्ये ।

ॐ गायत्र्याऽऽचार्यऋषिविश्वामित्रं तर्पयामि (१)। गायत्रीछन्दस्तर्पयामि (२)। सवितारं देवं तर्पयामि (३)।

इति तर्पणं कृत्वा, तस्मिन् रात्रौ देवतोपास्ति शुभा-ऽशुभस्वप्नं विचारयेत् । तद्यथा—स्नानादिकं कृत्वा, हरि-पादाम्बुजं स्मृत्वा, कुशासनादिशय्यायां यथासुखं स्थित्वा, वृषभध्वजं प्रार्थयेत् ।

अपने देह की शुद्धि के लिए तथा पुरश्चरण कर्म में अधिकार-प्राप्ति के लिए दश हजार गायत्री का जप करे। वह इस प्रकार है—

'देशकालौ संकीर्त्य' से 'जपमहं करिष्ये' पर्यन्त वाक्य पढ़ कर संकल्प करे। उसकी विधि इस प्रकार है—देश काल का उच्चारण कर, ज्ञात एवं अज्ञात पापों के क्षय के लिए तथा भविष्य में किये जाने वाले धनदा देवी-पुरश्चरण में अधिकार प्राप्ति के लिए तथा धनदा मन्त्र की सिद्धि हेतु दश हजार गायत्री का जप करता हूँ।

इस प्रकार संकल्प कर दश हजार गायत्री का जप करे। उसके बाद 'ॐ गायत्र्याचार्यऋषिविश्वामित्रं तर्पयामि(१)' से लेकर 'सवितारं देवं तर्पयामि ३) 'पर्यन्त' मन्त्रों को पढ़ कर क्रमशः तर्पण करे।

तर्पण करने के पश्चात् रात्रि में शुभाशुभ स्वप्न के लिए इस प्रकार देवता की प्रार्थना करे। स्नानादि कर्म कर विष्णु के चरण-कमल का

ॐ भगवन् देवदेवेश शूलभृद्-वृषवाहन !।
इष्टाऽनिष्टे समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वतः ॥ १ ॥
ॐ नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिङ्गलाय महात्मने ।
वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ॥ २ ॥
स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः ।
क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर ! ॥ ३ ॥

इति मन्त्रेणाऽष्टोत्तरशतवारं शिवं प्रार्थ्य, निद्रां कुर्यात् । ततः स्वप्ने दृष्टे निशि प्रातर्गुरवे विनिवेदयेत् । अथवा स्वयं स्वप्नं विचारयेत् । इति पूर्वकृत्यम् ।

स्मरण कर कुशासन की शय्या पर सुखपूर्वक बैठ कर वृषभध्वज भगवान् शङ्कर की 'ॐ भगवन्०' से 'त्वत्प्रसादान्महेश्वर' पर्यन्त श्लोक पढ़ते हुए प्रार्थना करे।

मन्त्रार्थ—देवदेवेश, शूलभृत्, वृषवाहन शाश्वत हे भगवन् सदाशिव ! मैं आज की रात्रि में सो रहा हूँ, अतः मेरे पुरश्चरण में होने वाले इष्ट अथवा अनिष्ट का बोध कराइए ॥ १ ॥

अज, त्रिनेत्र, पिङ्गल, महात्मा, वाम (सुन्दर), विश्वरूप, स्वप्नाधिपति सदाशिव को मेरा नमस्कार है ॥२॥

हे भगवन् ! मेरे काम की सम्पूर्णता में जो भविष्य हो उसे स्वप्न में कहिए। हे भगवन्, हे महेश्वर ! आपकी कृपा से मैं अपने कार्य में सिद्धि प्राप्त करूँ ॥ ३ ॥

इन मन्त्रों द्वारा एक सौ आठ बार शिव की प्रार्थना कर सो जाय। तदनन्तर रात्रि में देखे गये स्वप्न को अपने गुरु से निवेदन करे अथवा स्वयं स्वप्न का विचार करे। इस प्रकार पुरश्चरण का पूर्वकृत्य समाप्त।

ततश्चन्द्र-तारादिबलान्विते सुमुहूर्ते विविक्ते देशे जपस्थानं प्रकल्प्य, पुरश्चरणदिवसे ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय, प्रातःस्मरणं कृत्वा, मूलमन्त्रादि-शौचक्रिया-दन्तधावनादिकं च कृत्वा, स्नानं कुर्यात् ।

तद्यथा—तात्कालिकोद्धृतोदकेन उष्णोदकेन वा स्नानं कृत्वा, न तु पर्युषितशीतोदकेन ताम्रादिबृहत्पात्रे जलं गृहीत्वा, तीर्थान्यावाहयेत् । तत्र मन्त्रः—

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ! ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

इत्यावाह्य, ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत । ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः । समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत । अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् ॥

इसके बाद जिस दिन चन्द्रमा, तारादि अपने अनुकूल हों, उस दिन उत्तम मुहूर्त्त में, किसी एकान्त-स्थल में जप-स्थान निर्माण करे। पुरश्चरण के दिन ब्राह्ममुहूर्त्त में उठ कर प्रातःस्मरण करने के पश्चात् मल-मूत्रादि शौच क्रिया तथा दन्तधावन आदि कर स्नान करे।

स्नान की विधि इस प्रकार है—सद्यः कुँआ आदि से निकाले हुए जल से अथवा उष्ण जल से स्नान करे। बासी पानी से स्नान न करे। उसकी विधि इस प्रकार है—ताम्रादि निर्मित किसी बृहत्पात्र में जल रखकर उसमें 'गङ्गे च यमुने चैव०' से लेकर 'सन्निधिं कुरु' पर्यन्त मन्त्र पढ़ते हुए तीर्थों का आवाहन करे।

इति मन्त्रेणाऽभिमन्त्र्य, स्नापयेत्। एवं स्नानं कृत्वा, शुष्कं शुभ्रं कार्पासोत्पन्नरक्तवस्त्रं परिधाय, सूर्यायाऽर्घ्यं दद्यात्।

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां देव गृहाणाऽर्घ्यं नमोऽस्तु ते॥

इत्यर्घ्यं दत्वा, स्नानार्द्रं वस्त्रं परिपीड्य, आचम्य, पञ्चत्रिपुण्ड्रं कृत्वा, रक्तप्रवालमालां धारयेत्। जपस्थाने गत्वा, अश्वत्थोदुम्बर-प्लक्षाणामन्यतम-वितस्तिमात्रान् दश कीलान्। 'ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट्।' इति मन्त्रेणाऽष्टोत्तरशतमभिमन्त्रयेत्।

ॐ ये चाऽत्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यन्तरिक्षगाः।
विघ्नभूताश्च ये चाऽन्ये मम मन्त्रस्य सिद्धिषु॥ १॥

पश्चात् 'ऋतं व सत्यं च०' से लेकर 'यथा पूर्वमकल्पयत्' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर उसे अभिमन्त्रित कर स्नान करे। स्नान करने के पश्चात् सूखा-स्वच्छ कार्पास निर्मित उत्तम रक्तवर्ण का वस्त्र धारण कर 'ॐ एहि सूर्य सहशोः से लेकर 'नमोऽस्तु ते' पर्यन्त मन्त्र पढ़ते हुए सूर्य को अर्घ्य समर्पित करे।

अर्घ्य देने के पश्चात् स्नान से भींगे वस्त्र को निचोड़ कर आचमन कर पाँच स्थान में त्रिपुण्ड लगा कर लाल मूँगे की माला धारण करे। तदनन्तर जप स्थान पर जाकर पीपल, गूलर, पलाश वृक्षों में किसी एक की लकड़ी की एक-एक बित्ता की दश कीलें बनवा ले। इन कीलों

मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः ।
अपसर्पन्तु ते सर्वे निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे ॥ २ ॥

इति मन्त्रद्वयेन दशदिक्षु दश कीलान् निखनेत् । ततस्तेषु—
'ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट् ।' इति मन्त्रेण प्रत्येककीलं सम्पूज्य, तद्बाह्ये भूतबलिं दद्यात् ।

ॐ ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः ।
मातरोऽप्युग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च य ॥ १ ॥
विघ्नभूताश्च ये चाऽन्ये दिग्-विदिक्षु समाश्रिताः ।
ते सर्वे प्रीतमनसः प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिम् ॥ २ ॥

इति मन्त्रद्वयेन दशदिक्षु बाह्ये माषभक्तबलिं दद्यात् । इति भूतेभ्यो बलिं दत्त्वा, हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचामेत् ।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥
इति मन्त्रेण मण्डपान्तरं प्रोक्ष्य । तत्र तावत् कूर्ममुखे

को 'ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट्' इस मन्त्र से अभिमन्त्रित कर 'ये चात्र विघ्नकर्त्तारो' से 'निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे' पर्यन्त दो मन्त्रों को पढ़ कर दशों दिशाओं में दश कीलों को गाड़ दे। तदनन्तर 'ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्' इस मन्त्र से प्रत्येक कीलों की पूजा कर, उनके बाहर, 'ॐ ये रौद्रा' से लेकर 'बलिम्' पर्यन्त दो मन्त्रों को पढ़ कर दशों दिशाओं में माष भक्त की भूत बलि देवे। इस प्रकार भूतों के लिए बलि देकर हाथ-पैर धोकर आचमन करे। पश्चात्—

'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा' मन्त्र पढ़ कर मण्डप के भीतर प्रोक्षण

उपविश्य, जपं तत्रैव दीपस्थानं च कुर्यात् । तत्र आसनाधो जलादिना त्रिकोणं कृत्वा । तत्र—

ॐ कूर्माय नमः (१) । ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः (२)। ॐ पृथिव्यै नमः (३) ।

इति गन्धा-ऽक्षत-पुष्पैः सम्पूज्य । तदुपरि कुशासनं, तदुपरि मृगाजिनं, तदुपरि रक्तवर्णासनम्, आस्तीर्य, स्थापितानां त्रयाणामासनानामुपरि क्रमेण ।

ॐ अनन्तासनाय नमः (१) । ॐ विमलासनाय नमः (२) । ॐ पद्मासनाय नमः (३) ।

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः, कूर्मो देवता, सुतलं छन्दः, आसने विनियोगः ।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु चासनम् ॥

करे । वहीं कूर्म मुख स्थान पर बैठ कर दीप-स्थापन और जप करे । उसकी विधि इस प्रकार है—आसन के नीचे जल आदि से त्रिकोण बनावे । 'ॐ कूर्माय नमः (१)' से लेकर 'ॐ पृथिव्यै नमः (३)' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर गन्ध, अक्षत, पुष्पादि द्वारा उसका पूजन कर, उस पर कुशासन, उस पर मृगचर्म और मृगचर्म पर लाल वर्ण का आसन बिछा कर स्थापित तीन आसनों पर क्रम से 'अनन्तासनाय नमः' से लेकर 'पद्मासनाय नमः' पर्यन्त तीन मन्त्र पढ़ कर तीन-तीन कुशा प्रत्येक आसन पर रखे ।

इस प्रकार आसन स्थापित करने के पश्चात् उत्तराभिमुख बैठ हाथ में जल लेकर 'ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य' से 'आसने विनियोगः' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर उस जल को पृथ्वी पर गिरा देवे । पुनः 'ॐ पृथ्वि त्वया०' से लेकर 'पवित्रं कुरु चासनम्' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर आसन का प्रोक्षण करे ।

देशकालौ सङ्कीर्त्य, श्रीधनदेश्वरीप्रीतये लक्षसंख्यात्मकजप-पुरश्चरणमहं करिष्ये ।

इति सङ्कल्प्य, ततो भूतशुद्धि-प्राणप्रतिष्ठा-ऽन्तर्मातृका-बहिर्मातृकान्यासं च सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा, प्रयोगोक्त-न्यासादिकं विधाय, ध्यानं कुर्यात् ।

ध्यानम्—

ॐ कुङ्कुमोदरगर्भाभां किञ्चिद्यौवनशालिनीम् ।
मृणालकोमलभुजां केयूराङ्गदभूषिताम् ॥ १ ॥

तदनन्तर मूल मन्त्र से शिखा बाँध कर आचमन एवं प्राणायाम कर संकल्प करे । संकल्प की विधि इस प्रकार है –

'देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रः, अमुकशर्माऽहं श्रीधनदेश्वरीप्रीतये लक्षसंख्यात्मक-धनदामन्त्रजपपुरश्चरणाख्यं कर्म करिष्ये ।' इस प्रकार सङ्कल्प कर पश्चात् भूतशुद्धि से लेकर प्राणप्रतिष्ठा पर्यन्त अन्तर्मातृका तथा बहिर्मातृका न्यास सर्वदेवोपयोगि-पद्धति से करे । एतत्प्रयोगोक्त न्यासादि करे । फिर देवी का ध्यान 'ॐ कुङ्कुमोदरगर्भाभां०' से लेकर 'कुबेरं चामरद्वयम्' पर्यन्त पाँच श्लोकों से करे ।

ध्यान मन्त्र का अर्थ—जिन देवी के शरीर की कान्ति कुङ्कुम (केशर) के भीतरी भाग (पराग) के समान लाल वर्ण की है तथा जिनके शरीर पर युवावस्था की छटा का अभी उन्मेष हो रहा है, जिनकी भुजाएँ मृणाल सदृश कोमल और गौर है एवं केयूर तथा अङ्गद से भूषित हैं ॥ १ ॥

नीलोत्पलसदृशं किञ्चिदुद्यत्कुचविराजिताम् ।
कराभ्यां भ्राम्य कमलं वराभय-समन्विताम् ॥ २ ॥
रक्तवस्त्रपरीधानां ताम्बूलाधरपल्लवाम् ।
हेमप्राकारमध्यस्थां रत्नसिंहासनोपरि ॥ ३ ॥
ध्यायेत् कल्पतरोर्मूले देवीं तां धनदादिकाम् ।
रत्नपातद्वयं चाग्रे दायिनीं निधिवर्षिणीम् ॥ ४ ॥
अन्नपूर्णावराहाभ्यां श्रीभूमिसहितां जपेत् ।
अन्यहस्तगतं छत्रं कुबेरं चामरद्वयम् ॥ ५ ॥

विकास की अवस्था में प्राप्त हुए नीले कमल के समान किञ्चित् स्पष्ट रूप से उदीयमान जिनके दोनों कुचमण्डल हैं, जो दो हाथों से कमल को घुमा रही हैं तथा वर एवं अभय मुद्रा धारण की हुई हैं ॥ २ ॥

रक्त बस्त्र धारण की हुई जिस देवी के अधर पल्लव ताम्बूल से चर्चित हैं, जो हेमप्राकार के मध्य में रत्नसिंहासन पर विराजमान हैं ॥ ३ ॥

कल्पवृक्ष के नीचे बैठी हुई इस प्रकार की धनदात्री धनदादिका का ध्यान करना चाहिए। जिनके आगे दो रत्नपात्र रखे हुए हैं और जो नवो निधि की वर्षा करने बाली हैं ॥ ४ ॥

ऐसी देवी अन्नपूर्णा का, वराह एवं भूमि के साथ जप करना चाहिए। जिनका छत्र तो अन्य पुरुष ने लगाया है, किन्तु दोनों चामर (चँवर) कुबेर डुला रहे हैं ॥ ५ ॥

अर्घ्यस्थापनम्—

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

इति तीर्थान्यावाह्य, धेनुमुद्रां प्रदर्श्य, तदुपरि किञ्चिन्मूलं जप्त्वा, तज्जलं किञ्चित् प्रोक्षणीयपात्रे संस्थाप्य, तेनोदकेनात्मानं जपोपकरणं मूलेन त्रिवारं चाऽभ्युक्ष्य, पीठे यन्त्रं संस्थाप्य, प्रतिष्ठां कुर्यात् ।

प्राणप्रतिष्ठाप्रयोगः--

देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः, अमुकशर्माऽहं श्रीधनेश्वरी-नूतनयन्त्रे प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये ।

विनियोगः —

ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य,ब्रह्म-विष्णुमहेश्वरा ऋषयः,

---

अर्घ्यस्थापन—मूलमन्त्र के साथ 'फट्' लगाकर अर्घ्यपात्र प्रक्षालन करे,फिर आदि में प्रणव लगाकर मूलमन्त्र के अन्त में 'नमः' उच्चारणकर उसमें गन्ध, पुष्प डाले, पुनः 'गङ्गे च०' से लेकर 'सन्निधिं कुरु' पर्यन्त मन्त्र पढ़कर उसमें तीर्थों का आवाहन करे, जल डाले। पुनः धेनुमुद्रा प्रदर्शित कर उस जल के ऊपर मूलमन्त्र का जप कर अर्घ्यपात्र का थोड़ा जल प्रोक्षणी पात्र में डाले, उस प्रोक्षणी के जल से अपने को जप के लिए लायी गई समस्त सामग्रियों को मूल मन्त्र पढ़ते हुए तीन बार प्रक्षालित करे। पुनः पीठ पर यन्त्र स्थापित कर उसकी प्राण प्रतिष्ठा करे ।

प्राणप्रतिष्ठा प्रयोग—देश काल का संकीर्त्तन कर 'गोत्रः शर्माऽहं श्रीधनेश्वरीनूतनयन्त्रे प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये' इस प्रकार का संकल्प करे ।

विनियोग—हाथ में जल लेकर 'ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य०'

ऋग्यजुः—सामानि च्छन्दांसि, क्रियामयं वपुः, प्राणाख्या देवताः, आं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकम्, अस्मिन्नूतनयन्त्रे प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं श्रीधनदेश्वरीयन्त्रस्य प्राणा इह प्राणाः।

पुनः—ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं श्रीधनदेश्वरीयन्त्रस्य जीव इह स्थितः।

पुनः—ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं श्रीधनदेश्वरीयन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि।

पुनः—ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं श्रीधनदेश्वरीयन्त्रस्य वाङ्-मनस्त्वक्-चक्षु-श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-पाणि-पाद-पायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

से आरम्भ कर 'प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर यन्त्र पर जल छोड़ देवे।

तदनन्तर हाथ से ढँक कर 'ॐ आं ह्रीं०' से लेकर 'प्राणा इह प्राणाः' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर यन्त्र में प्राण पधरावे।

पुनः 'ॐ आं ह्रीं०' से लेकर 'जीव इह स्थितः' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर यन्त्र में जीव पधरावे :

पुनः 'ॐ आं ह्रीं०' से लेकर 'इह स्थितानि' मन्त्र पढ़ कर समस्त इन्द्रियों को पधरावे।

पुनः 'आं ह्रीं०' से लेकर 'चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर वाणी, मन, त्वक्, चक्षु, श्रोत्र, जिह्वा, घ्राण, पाणिपाद, पायू और उपस्थ को यन्त्र में पधरावे।

अनेन श्रीधनदेश्वरीयन्त्रस्य गर्भाधानादि-पञ्चदशसंस्कारान् सम्पादयामि। इति वदेत्। एवं प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा, तद्देशे मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य, आवाहनं कुर्यात्। तद्यथा—

देवेशि भक्तिसुलभे परिवारसमन्विते।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावद्देवि इहावस ॥ १ ॥
स्वागतं देवदेवेशि मद्भाग्यात्त्वमिहागता।
प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत् परिपालय ॥ २ ॥

इति प्रार्थयित्वा, 'ॐ पद्मायै नमः।' इति मन्त्रेण मध्ये सम्पूज्य, गन्धादिपूजनं कुर्यात्। तद्यथा—

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि (१)। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि (२)। यं वायव्यात्मकं धूपं समर्पयामि (३)। रं अग्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि (४)। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि (५)। सं सर्वात्मकं नमस्कारं समर्पयामि (६)।

इससे श्री धनदेश्वरी यन्त्र के गर्भाधान से लेकर पञ्चदश संस्कारों को सम्पन्न करता हूँ। इस प्रकार प्राण प्रतिष्ठा कर उसी यन्त्र में धनदेश्वरी की मूर्त्ति की कल्पना कर उनका आवाहन करे।

'देवेशि भक्तिसुलभे' से 'इहावस' पर्यन्त मन्त्र पढ़े, फिर मूलमन्त्र पढ़ कर 'ॐ धनदेश्वरी इहागच्छ इह तिष्ठ' कह कर यन्त्र में देवी का आवाहन करे। तदनन्तर 'स्वागतं देवदेवेशि०' से 'परिपालय' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर प्रार्थना करे।

इस प्रकार प्रार्थना कर 'ॐ पद्मायै नमः' इस मन्त्र से यन्त्र के मध्य में पूजा कर, आगे कही गई विधि से गन्धादि द्वारा इस प्रकार पूजन करे।

'लं पृथिव्यात्मकं०' इत्यादि मन्त्र पढ़ कर (१), 'हं आकाशात्मकं०' इत्यादि पढ़ कर पुष्प (२), 'यं वायव्यात्मकं०' इत्यादि पढ़ कर धूप (३), 'रं अग्न्यात्मकं०' इत्यादि मन्त्र पढ़ कर दीप (४), 'वं अमृतात्मकं'

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा मम ।
शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च देहि मे ॥
'ॐ ह्रीं सिध्यै नमः ।'

इति मालां शिरसि निधाय, गोमुखीं रहसि स्थापयेत् । नाऽशुचिः संस्पृशेत् । नाऽन्यस्मै दद्यात् । अशुचिस्थाने न निधापयेत् । स्वयोनिवद् गुप्तां कुर्यात् ।

ततः कवच-स्तोत्र-सहस्रनामादिकं पठित्वा,पुनः ऋष्यादि-न्यासादिकं च कृत्वा, पञ्चोपचारैः सम्पूज्य,पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

तत्र मन्त्रः—

ॐ नानासुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ।
पुष्पाञ्जलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि ! ॥
'श्रीधनदेश्वरीरतिप्रियायै नमः' पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।

इत्यादि पढ़ कर नैवेद्य (५), 'सं सर्वात्मकं०' इत्यादि पढ़ कर नमस्कार समर्पण (६) एवं पूजन कर, योनिमुद्रा दिखा कर मूगे की माला लेकर निर्दिष्ट संख्या में जप करे । पुनः जप कर लेने के पश्चात्—

'ॐ त्वं माले०' से लेकर 'ॐ ह्रीं सिद्धयै नमः' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर माला को शिर पर धारणकर गोमुखी को एकान्त में रख देवे । अपवित्र होकर उसका स्पर्श न करे, दूसरे को माला न देवे, अपवित्र स्थान पर उसे न रखे । अपनी योनि के समान उसे गुप्त रखे ।

इसके बाद कवच, स्तोत्र,सहस्र नामादि का पाठकर, पुनः ऋष्यादि-न्यास करे और पञ्चोपचार से पूजन कर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे ।

दोनों हाथ में पुष्प लेकर 'नानासुगन्धपुष्पाणि०' से लेकर 'श्रीधनदेश्वरीरतिप्रियायै नमः', 'पुष्पाञ्जलि समर्पयामि' पर्यन्त मन्त्र पढ़

ॐ ज्ञानतोऽज्ञानतो वाऽथ यन्मया क्रियते शिवे ।
मम कृत्यमिदं सर्वमिति देवि क्षमस्व मे ॥ १ ॥

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽहमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥ २ ॥

अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे ।
कोऽपरः सहतां लोके केवलं स्वामिनं विना ॥ ३ ॥

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ ४ ॥

कर पुष्पाञ्जलि देवे। पुनः अपराध क्षमापन के लिए दोनों हाथ जोड़ कर 'ॐ ज्ञानतोऽज्ञानतो॰' से लेकर 'परिपूर्णं तदस्तु मे' पर्यन्त पाँच श्लोकों का पाठ कर क्षमापन करवावे।

क्षमापन मन्त्र का अर्थ—हे कल्याणकारिणि! ज्ञानपूर्वक अथवा अज्ञानपूर्वक मैंने जो कर्म किया है यह सारा कृत्य दोषपूर्ण है। हे देवि! उसे आप क्षमा करो ॥ १ ॥

हे देवि! मैं सहस्रों अपराध प्रतिदिन करता हूँ, किन्तु आप मुझे अपना दास समझ कर क्षमा करें ॥ २ ॥

सेवक से पद-पद पर अपराध होना सम्भव है। किन्तु स्वामी को छोड़ कर और कोई उस अपराध को क्षमा करने में समर्थ नहीं होता ॥ ३ ॥

मेरे जप में जो अक्षर तथा जो पदभ्रष्ट हो गये हों तथा मात्रा से हीन जिस वर्ण का मैंने उच्चारण किया हो, हे देवि! वह सब आप क्षमा करो और मेरे ऊपर हे परमेश्वरि प्रसन्न होओ ॥ ४ ॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ ५ ॥
ॐ गुह्याऽतिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणाऽस्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात् त्वयि स्थितिः ॥

ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्ति-तुर्यावस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं श्रीधनदेश्वरीरतिप्रियायै समर्पयामि ।

हे सुरेश्वरि ! मैंने मन्त्र की हीनता से, क्रिया की हीनता से तथा भक्ति की हीनता से जो भी पूजा की है, वह आपकी कृपा से सब पूर्ण हो जावे ॥ ५ ॥

इस प्रकार हाथ जोड़ कर क्षमापन करने के पश्चात् अर्घोदक से एक चुल्लू जल लेकर नीचे लिखे 'ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री०' से लेकर 'श्रीधनदेश्वरीतिप्रियायै समर्पयामि' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर जल समर्पण कर जप समर्पित करे ।

जप समर्पण मन्त्र का अर्थ—हे देवि ! तुम गुह्य से भी अतिगुह्य की गोप्त्री हो, हमारे जप को स्वीकार करो । हे देवि ! मुझे इस जप से सिद्धि प्राप्त हो और तुम्हारी प्रसन्नता से मेरी स्थिति तुम में बनी रहे ।

ॐ इससे पूर्व मैंने जो प्राण बुद्धि धर्माधिकार से जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति तथा तुरीयावस्था में मन से, वचन से, कर्म से, दोनों हाथों से, दोनों पेरों से, उदर से, शिश्न से, जो स्मरण किया है, जो कहा है और जो किया है वह सब श्रीधनदेश्वरी-रतिप्रिया को समर्पण करता हूँ ।

धनदारतिप्रिया के एक लाख मन्त्र जपने से एक पुरश्चरण पूर्ण होता है ।

कुबेरमन्त्रः—

ॐ यक्षाय कुबेराय धनधान्याधिपतये धनधान्यसमृद्धिं मे देहि दापय स्वाहा।

अस्य पुरश्चरणं द्वादशसहस्रजपः नक्तभोजनं क्षीरोदनेन।

इति रतिप्रियाधनदायक्षिणीपद्धतिः समाप्ता ॥ २ ॥

●

कुबेर मन्त्र—'ॐ यक्षाय०' से आरम्भ कर 'दापय स्वाहा' पर्यन्त कुबेर का मन्त्र है।

इसका पुरश्चरण बारह हजार जप से पूर्ण होता है। कुबेर के पुरश्चरण में रात्रि में दूध और भात का भोजन करना चाहिए।

इस प्रकार आचार्य पण्डित शिवदत्त मिश्र शास्त्री कृत 'शिवदत्ती' हिन्दी टीका सहित यक्षिणी-तन्त्र में धनदा-रतिप्रिया-यक्षिणी पद्धति समाप्त ॥ २ ॥

धनदारतिप्रियायक्षिणीकवचम्

देव्युवाच—

कथयस्व महादेव! धनदाकवचं शुभम्।
यच्छ्रुत्वा कवचं दुर्गं कुबेर इव भैरव ॥ १ ॥

भैरव उवाच—

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि कवचं धनदाप्रियम्।
दारिद्र्यखण्डनं नाम सर्वसौभाग्यदायकम् ॥ २ ॥

विनियोगः—

ॐ अस्य श्रीधनदायक्षिणीकवचमन्त्रस्य कुबेरऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्रीधनदा देवता, रं बीजं, श्रीं शक्तिः, ह्रीं कीलकं, श्रीधनदेश्वरीप्रसादसिद्धये मे दारिद्र्यनाशाय श्रीधनदाकवचपाठे विनियोगः।

देवी बोलीं—हे महादेव! अब कल्याणकारी तथा दरिद्रता से अभेद्य धनदा कवच कहिए। हे भैरव, जिसे सुन कर मनुष्य कुबेर के समान धनी हो जाता है ॥ १ ॥

भैरव बोले—हे देवि! अब दारिद्र्य को दूर करने वाला तथा धनदा को प्रिय लगने वाला एवं सम्पूर्ण सौभाग्य प्रदान करने वाला धनदा कवच सुनो, मैं उसे कहता हूँ ॥ २ ॥

विनियोग—इस धनदा यक्षिणी कवच के कुबेर ऋषि हैं, पङ्क्ति छन्द है, श्रीधनदा देवता हैं, रं बीज है, श्रीं शक्ति है, ह्रीं कीलक है, श्री धनदेश्वरी के प्रसाद की सिद्धि के लिए तथा अपनी दरिद्रता दूर करने के लिए श्रीधनदा-कवच पाठ में यह विनियोग है।

ऋष्यादिन्यासः—ॐ ह्लां कुबेरऋषये नमः, शिरसि। ॐ ह्लीं पंक्तिच्छन्दसे नमः,मुखे। ॐ ह्लूं श्रीधनदादेवतायै नमः,हृदि। ॐह्ली रं बीजाय नमः, गुह्ये। ॐ ह्लौं श्रीं शक्तये नमः, पादयोः। ॐ ह्लः ह्लीं कीलकाय नमः, नाभौ। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः विनियोगाय नमः, सर्वाङ्गे। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यासः—ॐ ह्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्लीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्लूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्लैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्लौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यासः–ॐ ह्लां हृदयाय नमः। ॐ ह्लीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्लूं शिखायै वषट्। ॐ ह्लैं कवचाय हुम्। ॐ ह्लौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्लः अस्त्राय फट्। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

ऋष्यादिन्यास—'ॐ ह्लां कुबेरऋषये नमः, शिरसि' से प्रारम्भ कर 'विनियोगाय नमः, सर्वाङ्गे' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर तत्तदङ्गों का स्पर्श करे।

करन्यास—'ॐ ह्लां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः' से लेकर 'ॐ ह्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर दोनों हाथ की अङ्गुलियाँ तथा करतल के ऊपर एवं नीचे के भाग का स्पर्श करे।

हृदयादिषडङ्ग न्यास—'ॐ ह्लां हृदयाय नमः' से लेकर 'ॐ ह्लः अस्त्राय फट्' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर एक-एक मन्त्र से क्रमशः हृदय, शिर, शिखा, दोनों बाहु, दोनों नेत्र का स्पर्श करे, फिर दाहिने हाथ को ऊपर कर शिर के चारों ओर घुमा कर बाँयें करतल पर रख कर ताली बजावे।

ध्यानम्—

ॐ कुंकुमोदरगर्भाभां किञ्चिद्यौवनशालिनीम् ।
मृणालकोमलभुजां केयूरां गदभूषिताम् ॥ १ ॥
नीलोत्पलदृशं किञ्चिदुद्यत्कुचविराजिताम् ।
कराभ्यां भ्राम्य कमलं वराभयसमन्विताम् ॥ २ ॥
रक्तवस्त्रपरीधानां ताम्बूलाधरपल्लवाम् ।
हेमप्राकारमध्यस्थां रत्नसिंहासनोपरि ॥ ३ ॥

इति ध्यात्वा, कवचं पठेत् ।

ॐ तत्तुयं रक्षयेत् सर्वं शरीरं देवि ! सर्वतः ।
माया चक्षुर्भुजौ पातु पादौ रक्षेद्रतिप्रिया ॥ १ ॥

ध्यान—जिनके शरीर की कान्ति केशर के पराग के समान है तथा शरीर पर अभी युवावस्था का उन्मेष हो रहा है। कमल के मृणाल के समान कोमल तथा गौर वर्ण की जिनकी भुजा केयूर और अङ्गद से विभूषित हैं ॥ १ ॥

कुछ उभरे हुए तथा ऊपरी भाग में नीलोत्पल के सदृश कुच-मण्डलों से जो सुशोभित हैं,जो दो हाथों से कमल घुमा रही हैं तथा दोनों हाथों में वर एवं अभय मुद्रा धारण की हैं ॥ २ ॥

रक्त वस्त्र धारण करने वाली जिस देवी के अधर पल्लव ताम्बूल से चर्चित हैं, जो हेमप्राकार के मध्य में रत्न सिंहासन पर विराजमान हैं ॥ ३ ॥

इस प्रकार देवी का ध्यान कर, तत्पश्चात् कवच का पाठ करना चाहिए।

हे देवि ! तुम्हारा वाद्य हमारे शरीर की सर्वदा सर्वत्र रक्षा करे। माया, चक्षु और भुजाओं की रक्षा करे, रतिप्रिया पैर की रक्षा करें ॥ १ ॥

वह्निजाया पातु लिङ्गं मन्त्रं सर्वत्र रक्षतु ।
धनदा सर्वदा रक्षेत् पथि दुर्गे यमालये ॥ २ ॥

मञ्जुघोषा सदा पातु पृष्ठजानुयुगे बलम् ।
सुन्दरी दन्तजालं च कण्ठजालं च चामरी ॥ ३ ॥

भ्रामरी भ्रमणं रक्षेद् दशदिक्षु सुपाठिका ।
कालभैरवी सदा पातु वदनं श्रुतिनेत्रयोः ॥ ४ ॥

त्रिनेत्रा त्वरिता पातु मदङ्गं सर्वसङ्कटे ।
ओष्ठाधरौ महामाया रसनां चोरुदण्डयोः ॥ ५ ॥

अङ्गुलीषु तथा शक्तिर्जघनं चैव चण्डिका ।
ब्रह्माणी पातु मे पूर्वे माहेश्वरी तु दक्षिणे ॥ ६ ॥

वह्निजाया लिङ्ग की रक्षा करें, मन्त्र सर्वत्र हमारी रक्षा करे। धनदा सर्वदा कान्तार युक्त मार्ग में तथा यमालय में हमारी रक्षा करें ॥ २ ॥

मञ्जुघोषा हमारे पीठ की दोनों जानुओं की तथा बल की रक्षा करें। सुन्दरी दन्तसमूहों की तथा ऊपरी कण्ठजाल की रक्षा करें ॥ ३ ॥

भ्रामरी मेरी यात्रा की तथा सुपाठिका दशों दिशाओं में रक्षा करें। कालभैरवी मुख की रक्षा करें। त्रिनेत्रा श्रुति एवं नेत्र की रक्षा करें। त्वरिता सब प्रकार की संकटावस्था में हमारे शरीर की रक्षा करें। महामाया ओष्ठ, अधर, रसना तथा दोनों ऊरुदण्ड की रक्षा करें ॥ ४-५ ॥

शक्ति अङ्गुलियों की तथा चण्डिका जघन प्रदेश की रक्षा करें। पूर्व दिशा में ब्रह्माणी तथा दक्षिण दिशा में माहेश्वरी रक्षा करें ॥ ६ ॥

कौमारी पश्चिमे पातु वैष्णवी चोत्तरेऽवतु ।
ऐशान्ये पातु वाराही चामुण्डा वह्निकोणके ॥ ७ ॥

कौवेरी नैरृते पातु वायव्यां दुःखहारिणी ।
ऊर्ध्वं ब्राह्मी सदा पातु अधोऽनन्ता सदाऽवतु ॥ ८ ॥

ज्ञात्वा तु कवचं दिव्यं सुखेन सर्वसिद्धिकृत् ।
ध्यायेत् कल्पतरोर्मूले देवीं तां धनदायिकाम् ॥ ९ ॥

रत्नपात्रद्वयं चाग्रे दायिनीं निधिवर्षिणीम् ।
अन्नपूर्णावराहाभ्यां श्रीभूमि सहितां जपेत् ॥ १० ॥

कौमारी पश्चिम दिशा में, वैष्णवी उत्तर दिशा में, वाराही ईशान कोण में तथा चामुण्डा अग्निकोण में हमारी रक्षा करें ॥ ७ ॥

कौवेरी नैऋर्त्य कोण में, दुःखहारिणी वायव्य कोण में, ऊपर ब्रह्माणी तथा नीचे अनन्ता हमारी रक्षा करें ॥ ८ ॥

धनदा-कवच को पढ़ कर मनुष्य बहुत सुख के साथ सिद्धि प्राप्त कर लेता है।

धन देने वाली भगवती धनदा का ध्यान—कल्प वृक्ष के नीचे बैठी हुई भगवती के रूप में ध्यान करना चाहिए। जिनके आगे दो रत्नपात्र रखे हुए हैं, जो दानशीला एवं निधियों की वर्षा करने वाली हैं। वे अन्नपूर्णा वराह तथा भूमि के साथ निवास करने वाली हैं। इस प्रकार ध्यान कर उनका जप करना चाहिए ॥ ९-१० ॥

अन्यहस्तं गतं छत्रं कुबेरश्चामरद्वयम् ।
भविष्यति महादेव्या मन्त्रैः सर्वैः समृद्धिमान् ॥ ११ ॥

कदाचिद् यः पठेद्धीमान् न वै रोगो भवेद् ध्रुवम् ।
अपुत्रो लभते पुत्रं सर्वविद्यासुशोभनम् ॥ १२ ॥

इति रुद्रयामलोक्त-धनदायक्षिणीकवचं सम्पूर्णम् ॥ ३ ॥



उनका छत्र किसी अन्य ने धारण किया है, किन्तु कुबेर ने दोनों चामर धारण किया है। इस प्रकार ध्यान कर जो कवच के मन्त्रों का पाठ करता है, वह समृद्धि को प्राप्त कर लेता है ॥ ११ ॥

देवी के कवच का पाठ करने वाले को कभी रोग नहीं होता। यह बात निश्चित है। इतना ही नहीं, यदि पुत्रहीन धनदा-कवच का पाठ करे, तो उसे सभी विद्याओं से सुशोभित पुत्र रत्न प्राप्त हो जाता है ॥१२॥

इस प्रकार 'शिवदत्ती' हिन्दीटीका सहित यक्षिणी-तन्त्र में रुद्रयामलोक्त धनदा-यक्षिणी-कवच सम्पूर्ण ॥३॥



धनदा-यक्षिणी-स्तोत्रम्

देवी देवमुपागम्य नीलकण्ठं सदाशिवम् ।
कृपया पार्वती प्राह शङ्करं करुणाकरम् ॥ १ ॥

देव्युवाच—

ब्रूहि वल्लभ ! साधूनां दरिद्राणां कुटुम्बिनाम् ।
दारिद्र्यदलनोपायमञ्जसैव धनप्रदम् ॥ २ ॥

पूजयन् पार्वतीवाक्यमिदमाह महेश्वरः ।
उचितं जगदम्बासि तव प्रीत्याऽनुकम्पया ॥ ३ ॥

अत्यन्तं साऽनुजं रामं साञ्जनेयमथानुगम् ।
प्रणम्य परमानन्दं वक्ष्येऽहं स्तोत्रमुत्तमम् ॥ ४ ॥

एक बार देवी पार्वती नीलकण्ठ करुणाकर सदाशिव के समीप जाकर कृपापूर्वक बोलीं ॥ १ ॥

देवी बोलीं—हे प्राणप्रिय ! सन्मार्गस्थ सज्जन किन्तु दरिद्र-कुटुम्बी जनों के दारिद्र्य नाश के लिए सद्यः धनप्रद उपाय कृपा कर मुझे बताइए ? ॥ २ ॥

पार्वती के प्रश्न की प्रशंसा करते हुए महेश्वर ने कहा—तुम जगदम्बा हो, यह उचित ही है, जो इस प्रकार का प्रश्न किया ॥३॥

अब मैं अनुज (भरत–लक्ष्मणादि) एवं आञ्जनेय (हनुमान्) सहित श्री राम को अत्यन्त प्रणाम कर तुम्हारी प्रीति से, तुम्हारे ऊपर अनुकम्पा कर परमानन्द दायक सर्वश्रेष्ठ स्तोत्र को कहता हूँ ॥ ४ ॥

धनदाश्रद्दधानानां सद्यः सुलभसाधनम् ।
योगक्षेमकरं प्रोक्तं सत्यं मे वचनं यथा ॥ ५ ॥
पठेत्तस्याग्रतो वाऽपि ब्राह्मणो रसिकोत्तमः ।
धनलाभो भवेदाशु नाशयेत्तस्य निःस्वताम् ॥ ६ ॥

विनियोगः—

ॐ अस्य श्रीधनदास्तोत्रमन्त्रस्य कुबेरऋषिः, पंक्तिच्छन्दः, श्रीधनदेश्वरी देवता, धं बीजं, स्वाहा शक्तिः, श्रीं कीलकं, श्रीधनदेश्वरीप्रसादसिद्ध्यर्थं दारिद्र्यनाशाय स्तोत्रमन्त्रजपे (पाठे) विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—ॐ कुबेरऋषये नमः, शिरसि । पंक्तिच्छन्दसे नमः, मुखे । धनदादेवतायै नमः, हृदि । धं बीजाय नमः, गुह्ये । स्वाहाशक्तये नमः, पादयोः । श्रीं कीलकाय नमः, करसम्पुटे । श्रीधनदेश्वरीप्रसाद-सिद्ध्यर्थं दारिद्र्यनाशाय स्तोत्रमन्त्रजपे विनियोगाय नमः, सर्वाङ्गे । इति ऋष्यादिन्यासः ।

यह स्तोत्र धनदा में श्रद्धा रखने वाले भक्तों को शीघ्र सुलभ साधन है और उसका योग-क्षेम वहन करने वाला कहा गया है। यह मेरा वचन सत्य है ॥ ५ ॥

रसिकोत्तम जो ब्राह्मण धनदा के आगे इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसे धन-लाभ तो होता ही है, वह अपनी दरिद्रता का भी विनाश कर देता है ॥ ६ ॥

विनियोग—हाथ में जल लेकर 'ॐ अस्य०' से प्रारम्भ कर 'स्तोत्र-मन्त्रजपे (पाठे)विनियोगः' पर्यन्त वाक्य पढ़कर जल को नीचे गिरा देवे।

ऋष्यादिन्यास—'ॐ कुबेरऋषये नमः, शिरसि' से लेकर 'नमः,सर्वाङ्गे' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर क्रमशः शिर, मुख, हृदय, गुह्य, दोनों पैर, सम्पुटित दोनों हाथ तथा सर्वाङ्ग का स्पर्श करना चाहिए।

करन्यासः—ॐ श्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यासः—ॐ श्रां हृदयाय नमः। ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ श्रूं शिखायै वषट्। ॐ श्रैं कवचाय हुम्। श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ श्रः अस्त्राय फट्। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

ध्यानम्—

हेमप्राकारमध्ये सुरविटपितले रत्नपीठाधिरूढां
यक्षीं बालां स्मरामि परिमलकुसुमोद्भासिधम्मील्लभाराम्।
पीनोत्तुङ्गस्तनाढ्यां कुवलयनयनां रत्नकाञ्चीकराभ्यां
भ्राम्यद्रक्तोत्पलाभ्यां नवरविवसनां रक्तभूषाङ्गरागाम् ॥७॥

करन्यास—'ॐ श्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः' से लेकर 'ॐ श्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः' पर्यन्त मन्त्रों को पढ़ कर क्रमशः दोनों हाथ की अङ्गुष्ठ से लेकर कनिष्ठिका पर्यन्त अङ्गुलियों का स्पर्श करे। फिर दोनों हाथ के तलवे के ऊपर और नीचे का स्पर्श करे।

हृदयादिषडङ्गन्यास—'ॐ श्रां हृदयाय नमः' से प्रारम्भ कर 'ॐ श्रः अस्त्राय फट्' पर्यन्त मन्त्र पढ़कर क्रमशः हृदय, शिर, शिखा, दोनों बाहु और नेत्र का स्पर्श करे। फिर दाहिने हाथ को सिर के चारों ओर घुमा कर बाँयें हाथ की हथेली पर रख कर ताली बजावे।

ध्यान—स्वर्ण निर्मित प्राकार के मध्य में स्थित, कल्पवृक्ष के नीचे, रत्न सिंहासन पर विराजमान, सुगन्धित पुष्पों से ग्रथित, सुगन्ध युक्त केशों से अलङ्कृत यक्षिणी बाला का मैं स्मरण करता हूँ। जिनके दोनों स्तन पीन और उत्तुङ्ग हैं, कमल के समान नेत्र हैं, कटिप्रदेश में रत्न

ॐ भूभवां सम्भवां भूत्यै पंक्तिकल्पलतां शुभाम् ।
प्रार्थयेत्तांस्तथा कामान् कामधेनुस्वरूपिणीम् ॥ ८ ॥

धरामरप्रिये पुण्ये धन्ये धनदपूजिते ।
सुधनं धार्मिकं देहि यजनाय सुसत्वरम् ॥ ९ ॥

धर्मदे धनदे देवि दानदे तु दयाकरे ।
त्वं प्रसीद महेशानि यदर्थं प्रार्थयाम्यहम् ॥१०॥

रम्ये रुद्रप्रिये रूपे रमारूपे रविप्रिये ।
शशिप्रभमनोमूर्त्ते प्रसीद प्रणते मयि ॥११॥

की साढ़ी धारण करने वाली, जो देवी अपने दोनों हाथों में दो कमलों को घुमा रही हैं ऐसी नवीन सूर्य के किरणों के समान चमकदार वस्त्र धारण करने वाली, रत्न के आभूषणों से एवं अङ्गरागों से विभूषित भगवती धनदा का मैं ध्यान करता हूँ। इस प्रकार ध्यान एवं मानसोपचार से पूजन कर पश्चात् स्तोत्र का पाठ करना चाहिए ॥ ७ ॥

पृथ्वी से उत्पन्न होने वाली (सीतास्वरूपा) ऐश्वर्य प्रदान करने के लिए ही जन्म देने वाली तथा कामधेनु स्वरूपिणी उस भगवती से मैं अपनी कामनाओं की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करता हूँ ॥ ८ ॥

धरा स्थित मनुष्यों तथा स्वर्गलोक स्थित देवताओं से चाही जाने वाली, पुण्यशीले, धन्ये, धनपूजिते हे देवि ! मुझे यजन के लिए धर्मयुक्त उत्तम धन शीघ्र प्रदान करो ॥ ९ ॥

हे धर्म प्रदान करने वाली,हे धन देने वाली,हे दानशीले,हे दयामयि ! मैं जिस कामना के लिए तुम्हारी स्तुति करता हूँ। हे महेशानि ! तुम मुझ पर प्रसन्न होकर उस मेरी कामना की पूर्त्ति करो ॥ १० ॥

मनोहर स्वरूप वाली रुद्र की प्रिया, लक्ष्मी स्वरूप धारण करने वाली सूर्य की प्रिया, चन्द्रमा के समान मनोहर कान्ति वाली, हे भगवति धनदे ! आप मुझ प्रणत पर प्रसन्न होवें ॥ ११ ॥

आरक्तचरणाम्भोजे सिद्धसर्वाङ्गभूषिते ।
दिव्याम्बरधरे दिव्ये दिव्यमाल्योपशोभिते ॥१२॥
समस्तगुणसम्पन्ने सर्वलक्षणलक्षिते ।
जातरूपमणीन्द्रादिभूषिते भूमिभूषिते ॥१३॥
शरच्चन्द्रमुखे नीले नीरनीरजलोचने ।
चञ्चरीकं च भूवासं श्रीहारि कुटिलालके ॥१४॥
मत्ते भगवति मातः कलकण्ठरवामृते ।
हासावलोकनैर्दिव्यै-र्भक्तचिन्तापहारिके ॥१५॥

जिनके चरण-कमल रक्त वर्ण के हैं, तथा समस्त अङ्ग सिद्धियों से विभूषित हैं. दिव्य मालाओं एवं दिव्य वस्त्रों को धारण करने वाली हे दिव्य स्वरूपे देवि ! आप मुझ प्रणत पर प्रसन्न होओ ॥१२॥

जो समस्त गुणों से सम्पन्न हैं, सभी लक्षणों से लक्षित हैं, सुवर्ण तथा श्रेष्ठ मणियों से विभूषित हैं तथा भूमि से भूषित हैं ऐसी हे देवि, धनदे ! तुम मुझ प्रणत पर प्रसन्न होओ ॥ १३ ॥

जिनका मुख चन्द्रिका के समान उज्ज्वल है, नीलवर्ण वाली जिस देवी के नेत्र नीलकमल के समान मनोहर हैं, चञ्चरीक को लुभाने वाला तथा अत्यन्त मनोहर जिनके कुटिल केश हैं ऐसी हे देवि, धनदे ! तुम मुझ प्रणत पर प्रसन्न होओ ॥ १४ ॥

जो युवावस्था के मद से मत्त हैं, कोकिल के कण्ठरव के समान मनोहर जिनके शब्द हैं, जो अपने दिव्य मृदुहास तथा मन्द चित्तवन से भक्तों की चिन्ता को दूर करने वाली हैं ऐसी हे भगवति, हे मातः धनदे ! आप मुझ प्रणत पर प्रसन्न होइए ॥ १५ ॥

रूपलावण्यतारुण्ये कारुण्यामृतभाजने ।
क्वणत्-कङ्कणमञ्जीर-लसल्लीला-कराम्बुजे ॥१६॥

रुद्रप्रकाशिते सत्त्वे धर्माधारे दयालये ।
प्रयच्छ प्रजनायैव धनं धर्मैकशोधनम् ॥१७॥

मातरं वा विलम्बेन दिशस्व जगदम्बिके ।
कृपया करुणासारे प्रार्थितं पूरया शुभे ॥१८॥

वसुधे वसुधारूपे वसुवासववन्दिते ।
धनदे यजनायैव वरदे वरदा भव ॥१९॥

जिनका रूप तथा लावण्य तरुणाई की अवस्था को प्रगट करता है। जो करुणारूपी अमृत का भाजन हैं, कङ्कण तथा मञ्जीर के शब्दों से शोभायमान देवी के हाथों में कमल सुशोभित हो रहा है ऐसी हे देवि धनदे ! तुम मुझ प्रणत पर प्रसन्न होओ ॥ १६ ॥

रुद्र के समान प्रकाश वाली, तेजस्विनी, धर्माधार, दया की आलय मूर्तें, हे देवि ! तुम मुझे यजन के लिए धर्म मार्ग से धन प्रदान करो ॥ १७ ॥

हे जगदम्बिके ! आप बिना विलम्ब किये जगन्माता लक्ष्मी प्रदान करें। हे करुणासारे, हे कल्याणकारिणि ! आप मेरी प्रार्थना शीघ्र ही पूर्ण कीजिए ॥ १८ ॥

हे वसुधारण करने वाली वसुधा स्वरूपे हे वसु ! तथा वासव (इन्द्र) से वन्दिते ! वरदे ! हे धनदे ! मुझे यज्ञ के लिए धन का वरदान दीजिए ॥ १९ ॥

पूरयाइऽ मे

ब्राह्मण्ये ब्राह्मणे पूज्ये पार्वतीशिवशङ्करे ।
श्रीकरे शङ्करे श्रीदे प्रसीद मयि किङ्करे ॥२०॥
स्तोत्रं दारिद्र्यदावाग्नि-शमनं च धनप्रदम् ।
पार्वतीश-प्रसादेन सुरेशशङ्करेरितम् ॥२१॥
श्रद्धया ये पठिष्यन्ति पाठयिष्यन्ति भक्तितः ।
सहस्रमयुतं लक्षं धनलाभो भवेद् ध्रुवम् ॥२२॥

इति धनदा-यक्षिणी-स्तोत्रं समाप्तम् ॥ ३ ॥

हे ब्राह्मणों में भक्ति रखने वाली, हे ब्राह्मणों से प्रेम रखने वाली, हे पूज्ये ! हे पार्वती, हे शिवशङ्करि, हे श्री प्रदान करने वाली, हे कल्याण कारिणि ! मुझ सेवक पर प्रसन्न होवो ॥ २० ॥

यह स्तोत्र दारिद्र्य रूपी वनाग्नि को शान्त करने वाला है, धन प्रदान करता है। इसे पार्वती तथा सदाशिव की कृपा से शङ्कर ने इन्द्र को प्रदान किया था ॥ २१ ॥

जो लोग इस स्तोत्र को एक हजार, दश हजार अथवा एक लाख वार श्रद्धापूर्वक पढ़ेंगे अथवा भक्तिपूर्वक दूसरों को पढ़ावेंगे, उन्हें निश्चित रूप से धन का लाभ होगा ॥ २२ ॥

इस प्रकार आचार्य पण्डित शिवदत्त मिश्र शास्त्री कृत 'शिवदत्ती' हिन्दी टीका सहित धनदा-यक्षिणी-तन्त्र में धनदा-यक्षिणी-स्तोत्र समाप्त ॥ ४ ॥

श्रीसूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ॥ १ ॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ २ ॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ ३ ॥
कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां
ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां
तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ४ ॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं
श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मनीमिं शरणमहं प्रपद्ये
अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥ ५ ॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो
वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु
मायान्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ ६ ॥
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥ ७ ॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥ ८ ॥

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तमिहोपह्वये श्रियम् ॥ ९ ॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥
कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं च मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥
आर्द्रां पुष्करणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ॥१३॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ॥१४॥
तां मऽआवह जातवेदो
लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो
दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥

इति ऋग्वेदोक्तं श्रीसूक्तं समाप्तम् ।

लक्ष्मी-प्राप्ति के लिए यह सूक्त भी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। नियमपूर्वक प्रतिदिन इसके पाठ करने से धनदा-लक्ष्मी प्रसन्न होकर पाठक को लक्षपति एवं करोड़पति भी बना सकती हैं।

व्याख्याकार-संस्तवः

देवरिया-जनपदके ख्याते ग्रामे मझौलिकाऽभिख्ये ।
उद्भटशूरा मल्ला यत्राऽऽसन् विश्वविख्याताः ॥ १ ॥
विद्या-सदाचारगुण-प्रसिद्धा लोकद्वयी साधनकर्मसिद्धाः ।
यत्राऽभवँल्लोक - ललामभूता, विप्रा जगद्वन्दित-पादपद्माः ॥ २ ॥
पितामहोऽभून्मम लोकवित्तः, **श्रीकान्त**नामा-ऽऽगममर्म-विज्ञः ।
तदात्मजौ द्वौ परमाऽर्थनिष्ठौ, जातौ प्रतीक्ष्याऽर्चनरक्तचित्तौ ॥ ३ ॥
श्रीसन्तशरणनामा ज्यायानासीन्नितान्त-विख्यातः ।
शास्त्राऽनुशीलनपरः शुभकर्मपरायणः सततम् ॥ ४ ॥
श्रीसत्यनारायणनामधेय आसीत्कनीयाञ्शुभभागधेयः ।
द्वावप्यभूतां पितृभक्तिभाजौ, लोकोपकारे परमप्रवीणौ ॥ ५ ॥
श्रीसन्तशरणविदुषो द्वौ पुत्रौ भक्तिसम्पन्नौ ।
श्री**लजगन्नाथ** इति ज्यायानासीद् गुणाऽग्रणीर्धीमान् ॥ ६ ॥
तदनुजनुर्गुरुभक्तः **शिवदत्तो**ऽहं समाख्यया प्रथितः ।
पित्रोः परिचरणपरः शास्त्राऽम्बुधिमज्जने रसिकः ॥ ७ ॥
वागीश्वरी नाम ममाऽऽद्यपत्नी, **सावित्रि**काया प्रसवित्रिकाऽऽसीत् ।
सा **द्रौपदी** नाम मदन्यपत्नी, **पुष्पाप्रसूर्द्वे** अपि मुक्तिभाजौ ॥ ८ ॥
पौरस्त्य-पाश्चात्त्य-विशिष्टविद्या **कलाप्र**वीणस्य विचक्षणस्य ।
सत्यव्रतस्याऽस्ति कलत्ररत्नं **सावित्रि**का नाम मदीयकन्या ॥ ९ ॥
कनीयसी मे दुहिताऽस्ति **पुष्पा**, श्रीमद्-**रमेशा**ख्यबुधस्य पत्नी ।
उभे मदीये तनये, स्वधर्मं, सम्पाद्य सौभाग्य-समन्विते स्तः ॥ १० ॥
आचार्योऽहं शब्दशास्त्रे तथैव, साहित्याऽब्धिग्रन्थनिर्माणशीलः ।
तन्त्रे, स्तोत्रे, व्याकृतौ धर्मशास्त्रे, सन्ति ग्रन्था निर्मिता मामकीनाः ॥ ११ ॥
अद्याऽवधि ग्रन्थशताऽधिकं मे प्रकाशितं भूरिपरिश्रमेण ।
अशान्तयत्नेन कृतिं करोमि शास्त्रोक्तकृत्यं विदधामि नित्यम् ॥ १२ ॥
स्वचित्त-शिष्टा-ऽऽस्तिक-तोषणाय निरन्तरं शास्त्रचयं समीक्ष्य ।
मया प्रणीता विविधाः प्रबन्धाः संप्रार्थये तत्र सतां सुदृष्टिम् ॥ १३ ॥

क्षमा-प्रार्थना

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरी॥ १॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि!॥ २॥
यद्दत्तं भक्तिमात्रेण पत्रं पुष्पं फलं जलम्।
निवेदितं च नैवेद्यं तद्-गृहाणाऽनुकम्पया॥ ३॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि!।
यत्पूजितं मया देवि! परिपूर्णं तदस्तु मे॥ ४॥
अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत्।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः॥ ५॥
अज्ञानाद् विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि! प्रसीद परमेश्वरि॥ ६॥
कामेश्वरि! जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे।
गृहाण त्वं स्तुतिमिमां प्रसीद परमेश्वरि॥ ७॥
गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च।
आगता सुख-सम्पत्तिः पुण्याच्च तव दर्शनात्॥ ८॥
यदत्र पाठे जगदम्बिके मया, विसर्ग-विन्द्वक्षर-हीनमीरितम्।
तदस्तु सम्पूर्णतमं प्रसादतः, सङ्कल्पसिद्धिश्च सदैव जायताम्॥ ९॥
मोहादज्ञानतो वा पठितमपठितं, साम्प्रतं ते स्तवेऽस्मिन्।
तत्सर्वं साङ्गमास्तां भगवति वरदे!, त्वत्प्रसादात् प्रसीद॥ १०॥
यस्याऽर्थं पठितं स्तोत्रं तवेदं शङ्करप्रिये!।
तस्य देहस्य गेहस्य शान्तिर्भवतु सर्वदा॥ ११॥

इति धनदा-यक्षिणीतन्त्रे क्षमा-प्रार्थना-समाप्ता।

इति देवरिया-मण्डलान्तर्गत-'मझौली राज्य' (सम्प्रति वाराणसी)-वास्तव्येन पण्डितश्रीसन्तशरणमिश्रात्मज–आचार्य-पण्डित-श्रीशिवदत्तमिश्र-शास्त्रिणा 'शिवदत्ती' हिन्दीव्याख्यया विभूष्य संस्कृतं सम्पादितं च धनदा-यक्षिणी-तन्त्रं समाप्तम्।